

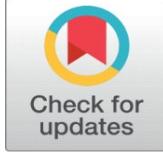
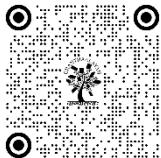
STORY RELATED TO RAMA IN DIFFERENT STYLES IN RAJASTHAN PAINTING STYLE

राजस्थान चित्र शैली में विभिन्न शैलियों में "राम विषयक कथा"

Rajni Sharma ¹  , Premlata ²

¹ Department of Visual and Performing Arts, Mangalayatan University, Beswan, Aligarh

² Department of Visual and Performing Arts, Mangalayatan University, Beswan, Aligarh



Corresponding Author

Rajni Sharma,
sharmarajni20feb@gmail.com

DOI

[10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.3339](https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.3339)

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



ABSTRACT

English: The story of Rama in the Mewar style of painting of Rajasthan has attracted the attention of many critics and reviewers. The illustrated Rama manuscripts prepared at the end of the period of Rana Jagat Singh of Mewar (1628-52) have been important not only for him but for more than 400 paintings. The famous scholar 'Goetz' does not consider these paintings to have any signs of the new style (Yug Art) but on the contrary, he has considered this style to be completely of the old style and these manuscripts to be depicting a long and highly developed tradition. They establish a harmony between the early Mewar style and the famous style of Jagat Singh's period. The Mewar style is visible in the sculptures and paintings of the 16th to 17th centuries. Dr. Sharma has considered the influence of Mughal style on the costumes and ornaments by giving examples of chokdar agarkhana jama, transparent sari, nose pin and armor etc. used in the paintings of Aranyakand. He has considered Ravana, who appears in disguise, to be a Muslim fakir instead of a saint. Similarly, Ram, who is fighting against Ravana's army, appears to be a Mughal soldier instead of a Rajput warrior. And all the miniature paintings of Arsha Ramayana are considered by many scholars to reflect Mughal influence and Apabhramsha style. Two Indian components, Persian element and European realism, have been important in the creation of Mughal style. The painters of Ramayana paintings, Manohar and Sahibdin, were the main painters of the period of Maharana Jagat Singh I (1628-52). And the credit of painting the main text of his time, 'Arsha Ramayana', also goes to these two artists. Shmotchandra has acknowledged the influence of Mughal art in the depiction of figures and architecture of all the Ramayana paintings, "according to Lasti's opinion, which reminds of Manohar. In such paintings, the mythological literature Ramayana and Mahabharata and the devotion and romance kept in the medieval period have been greatly enhanced by the literature of Ram. Hence, in the Arsh Ramayana written by Maharishi Valmiki in 1649 AD to 1653 AD, the various incidents related to the life of Ram have been depicted in these paintings in different ways and the artistic and aesthetic importance of the paintings have been presented before the art critics.

Hindi: राजस्थान की चित्रकला की मेवाड़ चित्र शैली में राम विषयक कथा में कई आलोचकों व समीक्षकों का ध्यान आकर्षित किया है। मेवाड़ के राणा जगत सिंह ;1628- 52द्वारा लिये उनके समय के काल के अंत में तैयार की गई सचित्र राम विषयक पाण्डुलिपिया न केवल उनके लिये ही नहीं बल्कि 400 से अधिक चित्रों के लिये महत्वपूर्ण रही है। प्रसिद्ध विद्वान् श्गोइत्जश् ने इन चित्रों में नवागत शैली (यग आर्ट) के आदेश भूत लक्षणों जैसा कुछ भी नहीं मानते हुए उसके विपरीत इस शैली की सम्पूर्ण रूप में पुरानी शैली की तथा इन पाण्डुलिपियों को दीर्घकालीन एवं उच्च विकसित परम्परा को चित्रित करने वाली माना है। प्रारम्भ की मेवाड़ शैली एवं जगत सिंह के काल की विख्यात शैली के बीच के तालमेल को स्थापित करती हैं। मेवाड़ शैली 16वीं 17वीं शताब्दी तक की मूर्तियां तथा चित्रों में दृष्टवय हैं। डॉ शर्मा ने आरण्यकाण्ड के चित्रों में प्रयोग चोकदार अगरखा जामा पारदर्शक साड़ी नथनी व कवच इत्यादि का उदाहरण देते हुऐ परिधानों एवं गहनों पर मुगल शैली का प्रभाव माना है। उन्होंने रावण को जो कि छद्म वेष में प्रकट होता है। साधु लगने की बजाय मुस्लिम फकीर प्रतीत होता है। एवं इसी तरह राम जो कि रावण की सेना के विरुद्ध लड़ रहा है। जो राजपुत योद्धा की बजाय मुगल सैनिक में प्रतित होता है। व आर्ष रामायण के सभी लघु चित्रों अनेक विद्वानों द्वारा मुगल प्रभाव व अपभ्रंश शैली को दर्शाता हैं। मुगल

शैली के निर्माण में प्रमुख रूप से दो भारतीय घटक फारसी तत्व एवं युरोपीय यर्थाथवाद महत्वपूर्ण रहे हैं। रामायण चित्रों के चित्रकार मनोहर और सहिबदीन महाराणा जगत सिंह प्रथम (1628-52) के काल के प्रमुख चित्रकार थे। एवं उनके समय के प्रमुख ग्रथ 'आर्ष रामायण' को चित्रित करने का श्रेय भी प्रमुख रूप से इन्हीं दो कलाकार को प्राप्त हैं। श्मोतीचन्द्रश् ने सभी रामायण के चित्रों की आकृतियों तथा स्थापत्य के निरूपण में मुगल कला के प्रभाव को माना है "लास्टी के मत के अनुसार जो मनोहर की याद दिलाते हैं। इस प्रकार के चित्रों में पौराणिक साहित्य रामायण एवं महाभारत तथा मध्यकाल में रखें गये भक्ति रस एवं शृंगार को राम के सहित ने खुब सुहारा दिया है। अतः महर्षि वाल्मीकि कृत सन् 1649 ई0 सन् 1653 ई0 तक चित्रकार सहिबदीन व मनोहर द्वारा चित्रित आर्ष रामायण इन चित्रों में राम के जीवन से जुड़े विभिन्न प्रसंगों को चित्रों के कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक महत्व को विभिन्न शैली के रूप में अलग-अलग रूप से चित्रित कर कला समीक्षकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

Keywords: Rajasthan, Ramayana, Book Painting, Different Styles, Ram Katha, राजस्थान, रामायण, पौरीचित्र, विभिन्न शैलिया, राम कथा

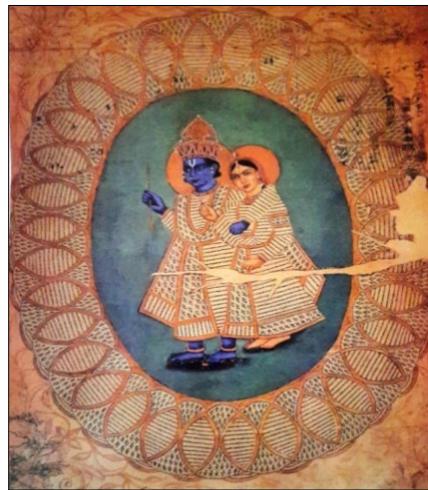
1. प्रस्तावना

सहिबदीन ने युद्धकाण्ड में राक्षसों का मानवीकरण करके उनके उत्साह या निराशा की भावनाओं को वयक्त करके वाल्मिकी की इमानदारी से वर्णन किया है राम के जन्म में लेकर अन्य राक्षसों के संहार व रावण के अंतिम संस्कार की तैयारी को पुस्तक में पहली बार चित्र के रंगीन अलग-अलग दृश्यों को विभाजित करके शैलियों के तत्वों समान गुबंदों में शामिल किया है जो रामायण में साहिबदीन की वास्तुकला में काफी हद तक अनुपस्थित है उनके रंग अधिक उज्ज्वल और कम समाजस्यपूर्ण हैं उनके परिदृश्य अधिक आदिम हैं जिसके परिणाम स्वरूप जैसी ऐसी रचनाएं मिलती हैं जैसे की सभी काण्डों का वर्णन मेवाड़ चित्र शैली के अन्तर्गत किया गया है जिसमें बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुंदरकाण्ड लंकाकाण्ड युद्धकाण्ड उत्तरकाण्ड हैं जिसमें रामायण के कुछ पात्रों रामायण और हनुमान की वंशावली व कारनामों का वर्णन किया गया है ऐसे ही मेवाड़ चित्र शैली किष्किन्धाकाण्ड व सुंदर काण्डों के रामायण पौरी चित्रों ने सबको चैकाया हैं विभिन्न बैगनी हरे पीले और भूरे रंग के हढ़ता से निश्चित घुमावदार प्रोफाइल्स और भौंहे वाले पात्र अन्य मेवाड़ शैलियों की तुलना में बढ़े हैं। पेड़ के तने जैसी परिदृश्य विशेषताएं हैं।

राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार डा० गोपीनाथ शर्मा ने गोइत्य के इन विचारों पर अपनी अहसमति जताई हैं उनके शब्दों में आर्ष रामायण उन चित्रित ग्रन्थों के समूह की हैं। जो न केवल राजपूत चित्रकला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पहचान को रूपान्तरित करते हैं बल्कि प्रारम्भ की मेवाड़ शैली एवं जगत सिंह के समय की विख्यात शैली के बीच में ताल-मेल स्थापित करती हैं।

पुराने समय में जब फोटोग्राफी का अविष्कार नहीं हुआ था, तब भी किताबों को सुंदर और रोचक बनाने के लिए लघुचित्रों का प्रयोग किया गया हैं ये लघु चित्र पौरी चित्र आमतौर पर हाथ से बनाए गए हैं वह रंग भी फूल व सब्जियों से लेकर तैयार करके जब भरे जाते थे क्योंकि उन्हें छोटी पौधियों में लगाना होता था उन पौरी चित्रों को छोटे रूप में चित्रित किया जाता था सिर्फ कुछ इंच चैड़ा वह कुछ इंच लंबा इन छोटे प्रारूप लघुचित्रों को पौरी चित्र या पांडुलिपि कहा जाता है यह रामायण पौरी चित्र विश्व में प्रसिद्ध है और भारत में उत्तर दक्षिण पूर्व और पश्चिम में कई अन्य क्षेत्र हैं जहां अभी भी लघु चित्र बनाए जाते हैं प्रत्येक क्षेत्र के कलाकार लघु चित्र बनाने में विशेषज्ञ बन गए हैं इन क्षेत्रों में कागड़ा और बसोहली, कोटा, पहाड़ी, मंडी, चम्बा, देवगढ़, जयपुर इत्यादि शैली में यह रामायण कथा पर आधारित पौरी चित्र मिलेंगे।

मेवाड़ उत्तर में हिंदू संस्कृति के प्रमुख केन्द्रों में से एक था। 15वीं और 16वीं सदी की शुरुआत में भारत 1568 में चित्तोड़ पर कब्जा करने के बाद भी मेवाड़ अकबर के अधीन होने से इंकार कर दिया और राणाओं ने अपनी राजधानियां छोड़ दी और पहाड़ियों से राजाओं से अपना प्रतिरोध जारी रखा। फिर भी 1605 में उनकी अस्थायी राजधानी चावड रागमाला में कुछ प्रकार की संस्कृति कायम रही। 1615 में मेवाड़ में शान्ति लौट आयी। जब राजा अमर सिंह (1597-1620) ने जहांगीर के बेटे राजकुमार खुर्रम के सामने समर्पण कर दिया और खुट को स्थापित कर लिया और उदयपुर में उनके दरबार जहां उन्होंने और उनके बेटे करण सिंह (1628-52) ने पुराने महल पर ध्यान लगाया। जगत सिंह के पूरे शासन काल में उनके प्रमुख कलाकार साहिबदीन थे जिन्होंने स्टूडियों के प्रमुख के रूप में कार्य किया होगा क्योंकि जगत सिंह के शासनकाल के लगभग अंत तक कला की लगभग सभी प्रस्तुतियां उन्हीं की शैली में हुई थीं अपने पूर्ववर्ती नुसरती चावड रागमाला के कलाकार नासिर अलदीन की तरह वह एक मुस्लिम थे मेवाड़ के सिसोदिया राजपूतों ने सूर्य से वंश का दावा किया और अपने पूर्वजों में राम को भी गिना ताकि जगत सिंह ने इस विशाल पांडुलिपि को अपने पूर्वजों के पारिवारिक इतिहास के रस में बनवाया, रामायण अनिवार्य रूप से धर्म के बारे में एक कहानी है। कर्तव्य की हिंदू अवधारणा जो विशेष रूप से राजपूत को उनके धर्म की अपनी अवधारणा के साथ पसंद आई। व्यक्तिगत सम्मान और वीरतापूर्ण शिष्टा जो मध्यकाल, प्राचीन काल पर आधारित है। साहिबदीन के हाथों राम की पीड़ा और वीरता तथा कर्तव्य परायणता की कहानी को कलात्मक ढंग से राजपूत आदर्शों और समाज की परिष्कृत अभिव्यक्ति में बदल दिया गया है। जगत सिंह की रामायण की बात पुस्तकों में भी प्रत्येक को नये पैमाने पर चित्रण किया गया है। जिसमें पूरे पृष्ठ पर पेंटिंग है। एक पवित्र पाठ के रूप में यह क्षेत्रिज रूप में भारतीय पौरी या ढीली पत्ती वाली पांडुलिपियों के पारम्परिक आकार का अनुसरण करता है। पेंटिंग आमतौर पर लगभग 19x35 सेमी मापने वाले लाल और पीले फ्रेम के भीतर संलग्न होती है। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं01



चित्र सं0-01 दिव्य शक्ति, राम और सीता, जयपुर, राजस्थान, सिरका 1800ई0, (राष्ट्रीय संग्रहालय), नई दिल्ली।

भारतीय चित्र शैलियों में रामायण का परिचय:-

- काम मोहित क्रोच दम्पत्ति के वध पर शोकागुल और विध्वल वाल्मीकि की ग्रीवा में श्लोक निर्झर निकलकर आदिकाव्य रामायण में पल्लिवत हो उठा और वह एशिया के उत्तरतम् हिमाच्छादित साइबेरिया से लेकर इंडोनेशिया की सभ्य श्यामला भूमि तक मानव की अन्तर्गति बन उसकी अन्तराल को आनन्द लहरी से आप्लावित करता रहता है।

**या निषाद! प्रतिष्ठा त्वगमः शाश्वती समाः।
यत्कौच मिथुनादेवकमवधीः काम मोहितम्।**

अर्थात् हे निषाद! तुमने काम मोहित इस क्रौंच का वध किया है। अतएव चिरकाल पर्यन्त तुम सुख शान्ति के भागी नहीं हो सकते। इन छन्द में वाल्मीकि के द्रवित हृदय से अनायास फूटी, निर्झर वाणी ने हमारी संस्कृति का निखिल स्वरूप मूलभूत संदेश एवं संगोपांग व्याख्या निहित है। महर्षि वाल्मीकि ऐसे महापुरुष की खोज में थे, जो गुणवान और पराक्रमी, धार्मिक, सत्यवादी कृतज्ञ, दृढ़वत, चरित्रवान सभी का हित चाहने वाला विद्वान समर्थ, प्रियदर्शन, मन को अधिकार में रखने वाला, क्रोधित कान्तिमान, किसी की भी निन्दा नहीं करने वाला, ईर्ष्याहीन और युद्धवीर हो। ये सम्पूर्ण विश्व के महान आदर्श हैं। जो वाल्मीकि के राम सतत् विद्यमान है। इन आदर्शों की प्राप्ति के लिए मानव बार-बार रामकथा का वाचन एवं मनन करता है। रामकथा, मानव-जीवन की कहानी है। रामायण पांडुलिपि का इतिहासिक परिचय के सामाजिक कला इतिहास पर यदि दृष्टिपात्र करे तो विदित होता है कि तत्समय चित्रों पर चित्रकारों की प्रथा अत्यधिक न्यून रूप से दृष्टिगत होती है। जैसा कि आर्ष रामायण के बालकाण्ड तथा युद्धकाण्ड में क्रमशः मनोहर तथा साहिबदिन के नामों का उल्लेख लिपिकार महात्मा हीरानन्द ने ग्रन्थों की पुस्तिका में किया है। जो शिष्य और गुरु दोनों कलाकार में होते हैं। लास्टी का मत प्राचीन सिद्ध होता है। जो उनके शब्दों में खासतौर से युद्धकाण्ड और अन्य ग्रन्थों के अनुलेखों में साहिबदिन का नाम है। इस पुकार के पौराणिक साहित्य रामायण को मध्यकाल में रचे गये भक्ति रस एवं श्रांगारिक रस के साहित्य ने खूब सहारा मेवाड़ के चित्रकारों ने साहित्यक रचनाओं के वर्णनों को बखूबी ही अपने चित्रों में बड़ी ही उज्जवलता के साथ उतारा। जो सात काण्डों पर चित्रित किये गये बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, युद्धकाण्ड, उत्तरकाण्ड।

राजस्थान चित्र शैली की विभिन्न शैलियों में राम विषयक कथा

पहले समय में जब फोटो ग्राफी का आविष्कार नहीं हुआ था तब भी किताबों को सुंदर और रोचक बनाने के लिये चित्रों का उपयोग किया जाता था। ये चित्र आमतौर से हाथ से बनाये जाते थे। इन छोटे प्रारूप चित्रों को लघु चित्र कहा जाता हैं। भारतीय लघुचित्र विश्व प्रसिद्ध है। ये लघु चित्र कांडा, बसोहली, कोटा, पहाड़ी, मंडी और दक्कनी जैसे लघु चित्रकला के कई स्कूल में मिलेंगे इन चित्रों में चमकीले और बोल्ड रंग हैं। जो छोटे पक्षियों बादलों झोपड़ियों पेड़ों में देखे गये हैं। इन चित्रों को राष्ट्रीय संग्रहालय में बहुत सुरक्षित तरीके से रखा गया हैं।

जब तक पहाड़ और नदिया पृथ्वी पर रहेगी।

जब तक रामायण की कहानी मनुष्यों के बीच कहीं सुनी जाती रहेगी जो पवित्र पापनाशक व वेदों के समान राम की इस कथा को पढ़ता है। वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

- **मालवा शैली**

राम का जन्म अग्नि देव के आर्शिवाद से अयोध्या के राम दशरथ के यहाँ हुआ थे दशरथ अयोध्या के राजा थे उनकी 3 रानिया थीं कौशल्या, कैकयी और सुमित्रा, कौशल्या ने उनके सबसे बड़े पुत्र राम को जन्म दिया, कैकयी भरत को, सुमित्रा के दो पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न हुए। भारत में राम का जन्मदिन बहुत धूमधाम से बनाया जाता है। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 2

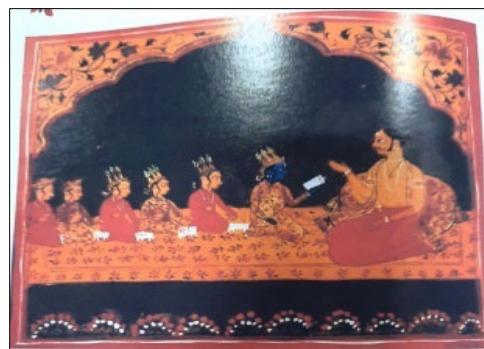


चित्र सं0 2, अयोध्या में उत्सवः राम और उनके तीन भाईयों का जन्म, मालवा शैली, मध्य भारत (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

- **बीकानेर शैली**

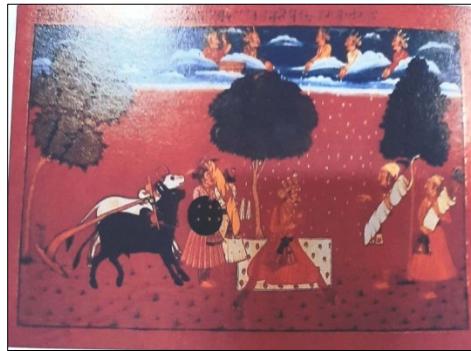
कम उम्र में धर्म ग्रन्थों और वृद्ध कला की शिक्षा दी गई। युवावस्था प्राप्त करने से पहले ऋषि विश्वामित्र के आदेश पर राम को राक्षसों से तपस्या को त्यागकर गहरे जंगल में भटकना पड़ा राक्षस के खिलाफ कार्यवाही के दौरान राम ने राक्षस भारिच को वश में किया राक्षसी ताड़का और उसके बेटे शक्तिशाली शुभाहु को मार डाला। उस क्षेत्र को राक्षसों के बुरे प्रभाव से मुक्त करने के बाद, राम ऋषि विश्वामित्र के साथ मिथिला जाते समय ऋषि गौतम के आश्रम गये और ऋषि गौतम की शक्ति पत्नी अहिल्या को पत्थर से वापस एक महिला के रूप में बदल दिया उनके पति ने उन्हे श्रृंगार दिया था और कहा था कि केवल भगवान राम के स्पर्श ही उन्हे श्राप से मुक्ति मिल सकती है।

राजा जनक मण्डी शैली जो मिथिला के राजा थे सीता माता उनकी पुत्री थी मिथिला के राजा जनक ने खेतों में धरती माता की गोद में पाया था। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 3



चित्र सं0 3, राम अपने भाईयों के साथ ऋषि वशिष्ठ के गुरुकुल में अध्ययन करते हुए, बीकानेर-दक्षिण मिश्रित शैली, दक्षिण-पश्चिम भारत- (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

राजा जनक अपनी पुत्री सीता के लिए अच्छा वर पाने के लिए एक प्रतियोगिता रखी उन्होंने पुरे भारत से राजकुमारों को अपने दरबार में आंमत्रित किया और उन्हे शक्तिशाली ऋषि परशुराम के धनुष को प्रत्यचा चढ़ाने की चुनौती दी, जो भगवान शिव के बहुत बड़े भक्त भी थे कई शक्तिशाली राजा और योद्धा इस आयोजन में भाग लेने के लिए एकत्रित हुए लेकिन असफल रहे जिसमें राजा जनक दुखी हो गये और अपनी बेटी की सारी आशा खो बैठें निराश राजा जनक किसी को भी धनुष पर प्रत्यचा चढ़ाने की चुनौती देकर अपनी निराशा व्यक्त की तब ऋषि विश्वामित्र ने आज्ञा दी। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 4



चित्र सं0 4, सीता का जन्म: मंडी शैली (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

राम ने शिव के शक्तिशाली धनुष कि प्रत्यंचा चढाई

- मण्डी शैली

भगवान राम ने जैसे ही धनुष पर प्रत्यंचा चढाने के लिए उसे मोड़ने लगे और शिव धनुष दो टुकड़ो में टुट गया तब विश्वामित्र ने राजा दशरथ को सीता के संवयवर के बारे में सुचित करने के लिए एक दूत को अयोध्या भेजा। फिर राम का विवाह सीता से व लक्ष्मण का उर्मिला से भरत का मांडवी से शत्रुघ्न से श्रुतकीर्ति से हो गया उत्सव समाप्त होने के बाद दशरथ राम और सीता के साथ आयोध्या लौट आये।

- बसोहली शैली

शिव के धनुष के टूटने की खबर महान शिव भक्त परशुराम तक पहुंची राम के कृत्य से क्रोधित होकर व स्वंयं भगवान को दंड देने आये थे तो अयोध्या लोटते समय रास्ते में उनकी राम से मुलाकात हुई क्रोधित परशुराम को देखकर राम केवल मुस्कराए। तब परशुराम ने पहचान लिया की वह स्वंयं अविनाशी विष्णु पुरुषोत्तम राम है और इस प्रकार वे श्रद्धापूर्व उनके सामने झुक गये। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 5



चित्र सं0 5, श्री राम की परशुराम से भंट-बसोहली शैली (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

अपनी शादी के बाद, भरत और शत्रुघ्न अपने मामा के यहां चले गये, राजा दशरथ ने घोषणा की वह अब वृद्ध हो गये हैं। इसलिए राम को अयोध्या का राजा बना दिया जाए। इस बड़ी खबर से कैकयी की दासी मंथरा उनको अपने दो वरदान याद दिलाती है। जो दशरथ ने उन्हें युद्ध के मैदान में दिए थे। जिसमें पहला वरदान अपने पुत्र भरत को राज्य सिंहासन और दूसरे वरदान में 14 वर्ष का वनवास राम को देने के लिए कहा। राम ने लक्ष्मण को शांत किया और वन के लिए सीता और लक्ष्मण के साथ निकल पड़ते हैं

- जयपुर मिश्रित शैली

भरत को जब यह बात पता चलती है तो वह अपनी तीनों माताओं व परिवार के अन्य सदस्यों और दरबारियों के साथ राम से मिले और अयोध्या लौटने का आग्रह करते हैं। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 6

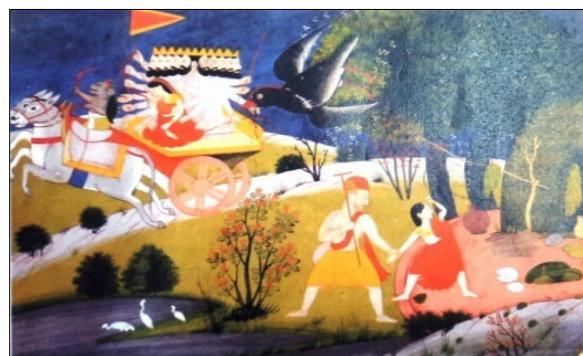


चित्र सं0 6, भरत की मुलाकात राम से चित्रकुट, दतिया-जयपुर, मिश्रित शैली लगभग 1740, (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

जब राम ने पुन आने से इन्कार कर दिया तो भरत उनकी पादुकाए लेकर वापस अयोध्या आ गये। राम के वियोग में राजा दशरथ ने प्राण त्याग दिये। राम और लक्ष्मण अनेक कष्टों को सहन करते हुए चित्रकुट में उनकी उपस्थिति से जगंल में ऋषियों को परेशानी हो रही थी। उस जगंल के राक्षसों ने उनके बहा रहने से अत्याचार बढ़ा दिये थे। इसके बाद राम और लक्ष्मण चित्रकुट छोड़ कर ऋषि अत्रि के आश्रम पहुंच गये। जहा उनकी मुलाकात ऋषि की पत्नी अनुसूइया से हुई अनुसूइया ने सीता को दिव्य आभूषण और वस्त्र दिए। जो न तो समय के साथ धूमिल होगे और नहीं कभी नष्ट होगे। ऋषि अत्रि और अनुसूइया का आर्शीवाद लेने के बाद राम दक्षिण की ओर पचंवटी की ओर बढ़े। राम ने अपने वनवास की शेष अविधि पचंवटी में बिताने का निर्णय लिया। रावण की बहन सुर्पणखा ने जगंल में सुन्दर राम को देखा और वह नीले शरीर और काली आँखों पर मोहित हो गई राम से विवाह करने के लिये राम से कहने लगी अतः; उन्होंने बताया कि वो पहले से ही विवाहित है। इसीलिये वह दूसरी पत्नी नहीं रख सकते उनके भाई लक्ष्मण पत्नी बना सकते हैं। तब सुर्पणखा लक्ष्मण के पास पहुंची। लक्ष्मण ने सुर्पणखा को समझाया कि वह राम का सेवक है। इसलिये वह उसे पत्नी नहीं बना सकता। उन दोनों ने उसका शादी का प्रस्ताव ठुकरा दिया तो वह उन्हे डराने के लिये भयानक रूप रखने लगी। तो लक्ष्मण ने सीता की रक्षा करते हुए सुर्पणखा की नाक काट दी। सुर्पणखा अपने भाई रावण से शिकायत करके अपने अपमान का बदला लेने को कहती है। और रावण को सीता से विवाह करने को उकसाती है और रावण अपनी पत्नी के समझाने पर भी कि वह एक आम इंसान नहीं बल्कि कोई दिव्य शक्ति है। वह उससे ना टकराये पर रावण द्वारा रचना रची गई और उसने मारीच को सुन्दर हिरण बनाकर राम और लक्ष्मण को गुमराह करने की कोशिश की।

- चंबा शैली

रावण सीता को चुराने एक साधु का भेष धारण करके जंगल में राम की कुटिया में पहुंच गया। उधर जब राम ने सुन्दर हिरन को देखा तो सीता ने उसे प्राप्त करने के लिये कहा तो राम उस हिरन (मारीच) को पकड़ने जंगल में दौड़ पड़े उधर अधिक वक्त लगने पर लक्ष्मण राम की खोज में निकल पड़े। लक्ष्मण की आवाज सुनकर आते देखा तो राम को एहसास हो गया कि किसी बुरी ताकत ने उन्हे गुमराह किया है और उधर रावण सीता को अकेली पाकर रावण एक ऋषि के रूप में उसके पास भिक्षा और भोजन मागने आता है। और वह जब उसे भोजन देती है। वह उसका हाथ पकड़कर उसे अपने उड़नखटोले पर ले जाता है रावण चित्र में अपने उड़नखटोले पर बैठ एक शक्ति शाली कई सिर और हाथों वाला एक बहुत बहादुर यौद्धा लग रहा है। और जटायु सीता कि रक्षा करने आते हैं तो रावण जटायु को घायल कर देता है और सीता को लेकर उड़ जाता है। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 7

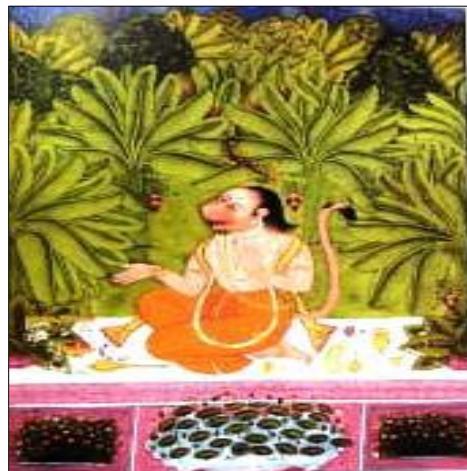


चित्र सं0 7, पंचमटी से रावण द्वारा सीता का अपहरण तथा जटायु द्वारा सीता को बचाने का प्रयास, चंबा शैली, उत्तर भारत, (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

सीता की तलाश करते हुए राम को जटायु मिले और सारी घटना जटायु ने राम से बताई और राम के हाथों में जटायु की मृत्यु हो गई और जटायु के बताए दिशा निर्देशों के अनुसार वह जंगल में आगे बढ़ गये। उन्हे एक आदिवासी महिला शबरी के आश्रम में पहुंचे बड़े उत्साह के साथ राम को मीठे बेर दिये और सभी जन जातियों से मित्रता की।

• उनियारा शैली

दक्षिण की ओर बढ़ते हुए राम ऋषि का नामक पर्वत पर पुहुंचे जहाँ सुग्रीव अपने भाई बाली द्वारा पराजित होकर छिपे हुए थे वही जंगल में हनुमान व जामवन्त और अपने साथ दोनों भाईयों को सीता को देखकर उनसे मिलने आये हनुमान ने विनम्रता पूर्वक राम का स्वागत किया और उन्हे सुग्रीव से मिलाने ले गये। राम ने अपने वनवास और सीता के अपहरण के बारे में बताया। हनुमान ने राम को सुग्रीव के भाई बाली के बारे में बताया तो राम ने भाई बाली से राज्य छिन लिया और सुग्रीव को दिया तो सुग्रीव ने सीता को वापस लाने में हनुमान की मदद की सीता लंका के अशोक वाटिका में रहती है। राम ने वानर सेना के साथ पत्थरों से पूल बनाया और लंका पर युद्ध की चढ़ाई कि रावण के पास युद्ध टालने का प्रस्ताव भेजा लेकिन रावण अड़ा रहा और राक्षसों और वानर सेना के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया तभी इन्द्रजीत का एक तीर लक्ष्मण को लग गया जिसमें वे बेहोश हो गये। दुखी राम ने घोषणा की यदि उनके भाई लक्ष्मण जीवित न रहे तो व अपने प्राण त्याग देगे। विभिषण रावण के भाई होकर भी उन्होंने रावण के चिकित्सक सुर्खण से इलाज की मदद ली। सुर्खण ने हनुमान को सूर्योदय से पहले ही सजीवनी बूटी लाने को कहा। जिससे लक्ष्मण की जान बच जाये। यह जड़ी-बूटी केवल द्रोण पर्वत पर मिलती थी। हनुमान द्रोण पर्वत पर सजीवनी बूटी नहीं पहचान पाये तो पूरा पर्वत उखाड़कर ले आये। राम ने हनुमान को अमरता का आर्शीवाद दिया और युद्ध और भी भयंकर हो गया। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 8

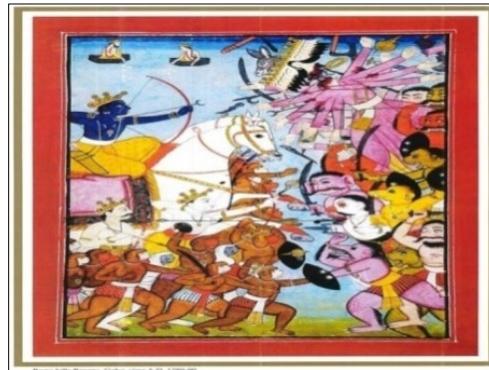


चित्र सं0 8, भगवान हनुमान उनियारा शैली, 18वीं सदी (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपिस तिहु लोक उजागर,
रामदुत, अतुलित बलधामा,
अंजनीपुत्र, पवनसुत नामा

• गुलेर शैली

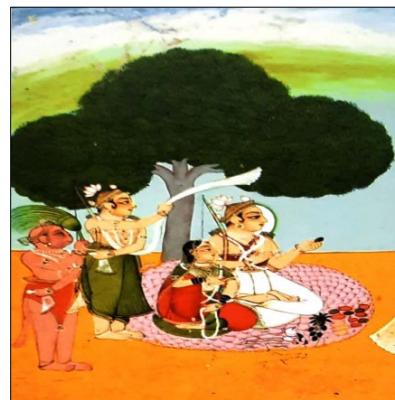
हनुमान ने जब रावण की लंका जला दी। तो रावण बहुत क्रोधित होता हैं। वह अपने भाई कुभकर्ण को नीद से जगा देता हैं। कुभकर्ण बहुत शक्तिशाली राक्षस था। जो पूरे साल सोता हैं। और आधे साल खाता है। उस जगाने के लिये अत्याधिक मात्रा में भोजन, मांस, शराब दिया जाता था और ढोल नगारो से वे तीर से चुभ्भोकर उठाया जाता था, अतः वो भी युद्ध में मारा जाता हैं। तब रावण अत्याधिक दुखी हो जाता हैं। अतं में रावण और राम आमने सामने थे, और राम ने ब्रह्मास्त्र का उपयोग करके शक्ति शाली रावण को मार डाला इस प्रकार बुरी ताकते नष्ट हो गई। विभिषण को लंका का राजा बना दिया गया। राम के 14 वर्ष की अवधी पूरी हो गई। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 9



चित्र सं0 9, राम, रावण का वध करते हुये, गुलेर शैली, सिरका 1780-90 ई0 (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

• बूंदी शैली

अयोध्या वापस जाने से पहले राम ने सीता से अग्नि-परीक्षा देकर सतीत्व को पुष्टि करने के लिये कहा तभी भगवान ने धोषणा की लंका में रहते हुए की वह सुरक्षित थी। और लंका में भी युद्ध समाप्त होने के बाद राम और सीता उड़ते हुए रथ पर सवार होकर सुरक्षित अयोध्या लोट आए। विभीषण, सुग्रीव, हनुमान, जामवंत, अंगद, राम के साथ ही लोट गये। भरत के लोगों ने बड़े ही धूमधाम से उनका स्वागत किया। राम राज्य पृथ्वी पर आदर्श साम्राज्य के रूप में जाना जाता था यदि कोई चीज सर्वोच्च थी, तो वह शांति, धार्मिकता, आस्था न्याय, कानून का पालन समानता थी। देखिये वरिशिष्ट संख्या नं0 10



चित्र सं0 10, भगवान राम और सीता जो कमल के फूलों पर बैठे हैं। बूंदी-शैली 18वीं सदी के अंत में, हस्तनिर्मित कागज पर वनस्पति रंग (राष्ट्रीय संग्रहालय) नई दिल्ली।

• 'रामायण का श्लोक'-

(एक श्लोकि रामायणम्)

आदौ राम तपोवनादि गमन हत्वा मृग कांचन।
वैद ही हरणं जटायुगरणं सुचीव सम्भाषणम्।
बाली निग्रहण समुद्रतरण लंका पुरी वाहन॥।
पश्चाद्वावरण कुम्भ कर्ण हवन मेंतद्वि रामायणम्॥।

2. निष्कर्ष

यह सम्पूर्ण प्रपत्र के अध्ययन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है। राजस्थान चित्र शैली में विभिन्न शैलियों में ''राम विषयक कथा'' अध्ययन में लघु चित्र बहुत सुन्दर व आकर्षित रंग योजना, हस्त निर्मित और आकार में छोटे हैं। इनके रंग खनिज रंग, कीमती पत्थर नील शंख व शुद्ध सोने और चाँदी से निर्मित किये जाते थे। जो पूर्व की निम्न प्रकार की शैलियों में देखने को मिलते थे। विशेष धार्मिक ग्रन्थ के विषय वस्तु पर बने चित्र में अपनी ही विशेष ख्याति हैं।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

- डॉ स्वदेश मल्होत्रा ए प्रमाण्ययुगीन उत्तर भारत में राम कथा चित्रावलीष्ट्
मोती चन्द्र ए ४१७वीं शताब्दी में मेवाड़ पेंटिंगष्ट्
एस०एल नागोरीए कान्ता नागोरीए प्राचीन भारत का वृहत इतिहासष्ट्
जे०पी० लास्टीए प्रमाण्यण पाण्डुलिपियाँष्ट्
दलजीत सिंहए ; २००३द्व प्राजस्थान की लघु चित्रकलाष्ट्
डॉ सरोज रानी ; २०१२द्वए प्र्यहाडी चित्रकला का अनुशीलनष्ट्
स्तीवन कोसाकय प्रभारतीय दरबारी चित्रकला १६वीं-१९वीं शताब्दीष्ट्
रोडा अहलुवालियाए प्रभारत में दरबारी कलाष्ट्
डॉ योगन्द्र प्रताप सिंह ; २००८द्वए प्रभारतीय भाषाओं में रामकथाष्ट्
सुरेन्द्रए प्राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में भारतीय चित्रकला का विकासष्ट्
डॉ संजू मिश्राए प्लघु चित्रों में राम कथा की परम्पराष्ट्
नीलिमा वशिष्ठए प्राजस्थान में विजुयल और परफारमिंग आर्ट में रामकथाष्ट्
प्रेमचन्द्र गोस्वामीए प्रभारतीय कला के विविध स्वरूपष्ट्
वी० ओहजाए सुमेधदाए प्रामाण्यष्ट्
डॉ राजेश्वर व्यासए प्रमेवाड़ की कला और स्थापत्यष्ट्
डॉ शैलेन्द्र कुमार ; २००९द्व प्रउत्तर भारतीय पोथी चित्रकलाष्ट्